

ऋग्वेद

मण्डल १०, अनुवाक १२, सूक्त १९१ ।

अष्टक ८, अध्याय ८, वर्ग ४९ ।

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Rigveda

Maṇḍala 10, Anuvaaka 12, Sookta 191.

Aṣṭaka 8, Adhyaaya 8, Varga 49.

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

There are two independent systems in place for classifying the 10522 Mantras from the Ṛigveda.

The first system has the Mantras broadly classified in Maṇḍalas. Each Maṇḍala has Anuvaakas which are further divided into Sooktas. However it is noteworthy that the Sooktas are numbered independently within a Maṇḍala and their numbering do not reset at the switchover of Anuvaakas. Due to this, many scholars consider Anuvaaka to be redundant and do not use them in their translations. There are a total of 10 Maṇḍalas, 85 Anuvaakas and 1028 Sooktas in the Ṛigveda. The sizes of the Maṇḍalas vary considerably between 429 Mantras to 1976 Mantras. The sizes of the Sooktas vary from 1 Mantra to 58 Mantras.

The second system tries to evenly distribute the Mantras between 8 Aṣṭakas which are further divided into 8 Adhyaayas each. These 64 Adhyaayas are further subdivided into 2024 Vargas. The normal size of a Varga is five Mantras, however, it varies from one to twelve Mantras with either extremes being rare.

Even though the second system does not have the Sookta classification, it honors the sanctity of a Sookta. One Sookta belongs to only one Aṣṭaka and one Adhyaaya. The Mantras from a Sookta may be further grouped into multiple Vargas. The Vargas however, do not mix Mantras from different Sooktas.

Nowadays, Maṇḍala / Anuvaaka / Sookta classification is more popular and has been used in this translation as well. However, the Aṣṭaka / Adhyaaya / Varga is mentioned in the page header for reference, if needed.

सारांश

इस सूक्त में विभिन्न तत्त्वों, प्राणियों, मनुष्यों, राष्ट्र के नागरिकों और दलों के सदस्यों में सौहार्द व सामजस्य के लिए प्रार्थना व निर्देश है । प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह स्वार्थ से ऊपर उठकर स्वयं से पहले अपने दल, राष्ट्र व जगत के विषय में सोचे और ठीक प्रकार से अपने कर्तव्यों का निर्वाह करे ।

उनतालीसवे वर्ग का आरम्भ होता है ।

प्रथम मन्त्र में प्रभु के द्वारा जड़ व जीवों में स्थापित सामजस्य का वर्णन है ।

संवन्न ऋषिः । अग्निर्देवता । ३० अक्षराणि । विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।

इळस्पदे समिध्यसे स नो वसुन्या भर ॥१॥

ऋग् १०:१२:१९१:१, यजुः १५:३०, अथर्व ६:७:६३:४

सम्ऽसम् । इत् । युवसे । वृषन् । अग्ने । विश्वानि । अर्यः । आ ॥

इळः । पदे । सम् । इध्यसे । सः । नः । वसूनि । आ । भर ॥१॥

(अग्ने) हे ज्ञान के प्रकाशक! (वृषन्) हे सुखों की वर्षा करने वाले परमेश्वर! आप ही सब के (अर्यः) स्वामी हो । आपने (इत्) ही जगत की (विश्वानि) सभी जड़ वस्तुओं और चेतन प्राणियों को (युवसे) भली प्रकार (आ) मिलाकर उनमें (सम्ऽसम्) सामजस्य स्थापित किया है । (इळः) वेद वाणी की (पदे) ऋचाओं में जो सब ओर से (सम्) समयक् (इध्यसे) प्रकाशित है (सः) वह आप ही हैं । आप (नः) हमें (वसूनि) सुख समृद्धि प्रदान करने वाले धन (आ) सब ओर से (भर) प्राप्त कराईये ।

दूसरे मन्त्र में सबके लिए सौहार्दपूर्वक जीवन जीने का संदेश है ।

संवन्न ऋषिः । सञ्ज्ञानं देवता । ३२ अक्षराणि । आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥२॥

ऋग् १०:१२:१९१:२

सम् । गच्छध्वम् । सम् । वदध्वम् । सम् । वः । मनांसि । जानताम् ॥

देवाः । भागम् । यथा । पूर्वे । सम्ऽजानानाः । उपऽआसते ॥२॥

Synopsis

This composition contains prayers and directives for harmony between various elements, living beings, human race, citizens and team members. Every human has been directed to rise above selfish motives and prioritize the fulfillment of his/her duties towards the group, nation, humanity and the world as a whole before his/her self interest.

Here begins the forty-ninth Varga.

In the first mantra the sage describes the harmony between living beings and non-living things.

ṛiṣhiḥ samvananaḥ, **devataa** agniḥ, **vowels** 30, **chhandah** viraad aarṣhy anuṣṭup, **svarah** gaandhaaraḥ.

**1. sansamidyuvase vṛiṣhannagne vishvaanyarya aa,
iḷaspade samidhyase sa no vasoonyaa bhara.**

Rig 10:12:191:1, Yajuh 15:30, Atharva 6:7:63:4

sam-sam it yuvase vṛiṣhan agne vishvaani aryaḥ aa,
iḷaḥ pade sam idhyase saḥ naḥ vasooni aa bhara.

(agne) **O provider of the illumination of knowledge! O (aryaḥ) Lord (vṛiṣhan) showering the bliss! You have (it) indeed brought (vishvaani) all elements (yuvase) together and (aa) created (sam-sam) harmony between all living beings and non-living things. You are (saḥ) the one whose (idhyase) illumination is (sam) all over in the (pade) hymns of the (iḷaḥ) Vedas. Please (bhara) grant (naḥ) us (vasooni) abundant wealth (aa) from all directions.**

In the second mantra the sage advises all humans to live in harmony with each other.

ṛiṣhiḥ samvananaḥ, **devataa** sañjñānam, **vowels** 32, **chhandah** aarṣhy anuṣṭup, **svarah** gaandhaaraḥ.

**2. sañ gachchhadhvan sam vadadhvan sam vo manaansi jaanataam,
devaa bhaagañ yathaa poorve sañjaanaanaa upaasate.**

Rig 10:12:191:2

sam gachchchadhvam sam vadadhvan sam vaḥ manaansi jaanataam,
devaah bhaagam yathaa poorve sam-jaanaanaah upaasate.

हे मनुष्यों! तुम परस्पर (सम्) मिलकर (गच्छध्वम्) चलो, (सम्) सौहार्दपूर्वक (वदध्वम्) वार्तालाप करो और (वः) तुम्हारे (मनांसि) मनो में (सम्) एक दूसरे के हित के विचार (जानताम्) घर करे । (यथा) जैसे (पूर्व) प्राचीन समय से (देवाः) विद्वान् (सम्ऽजानानाः) एकमत हो (भागम्) अपने अपने भाग के कर्तव्यों का पालन करना ही (उपऽआसते) उपासना करना मानते आये हैं वैसे ही तुम भी अपने सामाजिक कर्तव्यों का पालन करो ।

तीसरे मन्त्र में सभी के लिए एकजुट हो राष्ट्रहित में कार्य करने का निर्देश है ।

संवन्न ऋषिः। सञ्ज्ञानं देवता । ४४ अक्षराणि । आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः । धैवतः स्वरः ।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।

समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥३॥

ऋग् १०:१२:१९१:३, अथर्व ६:७:६४:२

समानः । मन्त्रः । सम्ऽइति । समानी । समानम् । मनः । सह । चित्तम् । एषाम् ॥

समानम् । मन्त्रम् । अभि । मन्त्रये । वः । समानेन । वः । हविषा । जुहोमि ॥३॥

राष्ट्र में मार्गदर्शन व न्याय व्यवस्था के (मन्त्रः) मन्त्र सबके लिए (समानः) समान हों; (सम्ऽइति) व्यवहार के नियम सबके लिए (समानी) समान हों अर्थात् छुआछूत आदि से रहित हों । (एषाम्) सबके (मनः) मन (समानम्) एक समान केवल उन्नति की दिशा में चलें । सबकी (चित्तम्) भावनाएं भी एक समान (सह) सौहार्द वाली हों । ईश्वर ने व राजा ने (वः) तुम सबके लिए (समानम्) एक समान (मन्त्रम्) अधिकारों का (मन्त्रये) नियम व विधान (अभि) रचा है । (वः) तुम्हारे पुरुषार्थ से अर्जित धन में से (हविषा) ईश्वर के लिए आहुति और राजा के लिए कर (जुहोमि) देने का नियम भी सबके लिए (समानेन) समान हों । सबके लिए नियम, अधिकार, कर आदि समान होने के साथ साथ वैदिक धर्म के अनुरूप भी हो और कोई भी नियम या अधिकार वेदों की आज्ञा का उलंघन ना करे ।

चौथे मन्त्र में दल के सदस्यों के लिए परस्पर सहयोग का संदेश है ।

संवन्न ऋषिः। सञ्ज्ञानं देवता । ३१ अक्षराणि । निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥४॥

ऋग् १०:१२:१९१:४, अथर्व ६:७:६४:३

O Humankind! You should assemble and (*gachchhadhvam*) march forward with a (*sam*) common purpose. You should (*vadadhvam*) confer (*sam*) together with open minds and (*jaanataam*) pool (*vaḥ*) your (*manaansi*) thoughts for (*sam*) integrated wisdom. Since the (*poorve*) time immemorial, (*yathaa*) as the (*devaah*) scholars have set high standards of (*sam jaanaanaah*) unity by (*upaasate*) fulfilling their (*bhaagam*) share of duties diligently, so should you work together harmoniously for the common good.

In the third mantra the sage advises us to work harmoniously towards the prosperity of the nation.

ṛiṣhiḥ samvananaḥ, devataa sañjñaanam, vowels 44, chhandah aarṣhee triṣṭup, svarah dhaivataḥ.

**3. samaano mantrah samitiḥ samaanee samaanam manah saha
chittameṣhaam,
samaanam mantram abhimantraye vaḥ samaanena vo haviṣhaa
juhomi.**

Rig 10:12:191:3, Atharva 6:7:64:2

samaanah mantrah samitiḥ samaanee samaanam manah saha chittam eṣhaam,
samaanam mantram abhi mantraye vaḥ samaanena vaḥ haviṣhaa juhomi.

In the nation everyone should have (*samaanah*) equal (*mantrah*) rights, opportunities and access to law enforcement. The (*samitiḥ*) code of conduct should be (*samaanee*) same for everyone as well; devoid of any discriminatory policies. Everyone's (*manah*) thought should be (*samaanam*) similarly geared towards the prosperity of the nation. And (*eṣhaam*) everyone's (*chittam*) feelings and dispositions should be in (*saha*) harmony. God has created and the king should (*abhi*) create a (*mantraye*) constitution granting (*samaanam*) equal (*mantram*) rights (*vaḥ*) for all of you. There is also a (*samaanena*) non-discriminatory (*juhomi*) provision of (*haviṣhaa*) tax for the king and offerings for God, out of (*vaḥ*) your hard earned wealth. The rights, opportunities, code of conduct, taxes etc., apart from being equitable should also be in accordance with the dharma established in the Vedas and not transgress any of the teachings of the Vedas.

In the fourth mantra the sage advises that members of a team should act in harmony.

ṛiṣhiḥ samvananaḥ, devataa sañjñaanam, vowels 31, chhandah nichṛid aarṣhy anuṣṭup, svarah gaandhaarah.

**4. samaanee va aakootiḥ samaanaa hṛidayaani vaḥ,
samaanam astu vo mano yathaa vaḥ susahaasati.**

Rig 10:12:191:4, Atharva 6:7:64:3

samaanee vaḥ aakootiḥ samaanaa hṛidayaani vaḥ,
samaanam astu vaḥ manah yathaa vaḥ su-saha asati.

स॒मा॒नी । वः । आऽकू॑तिः । स॒मा॒ना । हृद॑यानि । वः ॥

स॒मा॒नम् । अ॒स्तु । वः । मनः॑ । यथा॑ । वः । सु॒ऽस॒ह । अ॒स॒ति ॥४॥

(वः) तुम्हारे (आऽकूतिः) संकल्प (समानी) समान हों । (वः) तुम्हारी (हृदयानि) भावनाएं (समाना) समान हों । (वः) तुम्हारी (मनः) इच्छाएं (समानम्) समान (अस्तु) हों । (यथा) जिससे (वः) तुम्हारे (सुऽसह) उत्तम मेल में (असति) कोई विरोध न हो ।

उनतालीसवा वर्ग समाप्त हुआ ।

Ṛigveda - Maṇḍala 10 Anuvaaka 12 Sookta 191; Aṣṭaka 8 Adhyaaya 8 Varga 49

(vaḥ) Your (aakootiḥ) determinations should be (samaanee) perfectly harmonious; (vaḥ) your (hṛidayaani) hearts should be in (samaanaa) absolute accord; (vaḥ) your (manaḥ) feelings and aspirations (astu) should be in (samaanam) harmony; (yathaa) so that there (asati) is no obstacle in (vaḥ) your (su-saha) strong fellowship and unity.

Here ends the forty-ninth Varga.